RNI NO. : MPHIN33094

अंक 41

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशन का गौरवमयी 11वाँ वर्ष

पाठशाला चले हम..

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

अवश्य पधारिये | महामुनिराज आचार्य कुन्दकुन्द देव की तपोभूमि पोन्नूर मलै में आयोजित | तपोभूमि पोन्नूर

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

मंगलवार, 21 फरवरी से रविवार, 26 फरवरी 2017

विद्वत् सान्निध्य : ❋ पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली ❋ प्रो. डॉ. सुदीप कुमार जी दिल्ली ❋ डॉ. राकेश शास्त्री, नागपुर

विशेष आकर्षण :– ♦ आचार्य कुन्दकुन्द की तपो एवं विदेह गमन भूमि पोन्नूर एवं आसपास के अनेक प्राचीन जिनमंदिरों के दर्शन ♦सीमन्धर भगवान के मनोहारी दर्शन एवं पूजन विधान का मधर आयोजन प्राकृतिक एवं शांत वातावरण में जिनवाणी की अमृत देशना ♦ पूज्य गुरुदेवश्री के सीडी प्रवचन एवं उसके रहस्यों का लाभ ♦ अन्य समागत विद्वानों का प्रासंगिक लाभ

संयोजक – विराग शास्त्री, जबलपुर मो. 9300642434, email: kahansandesh@gmail.com

कार्यक्रम स्थल : आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर, कुन्दकुन्द नगर, पोन्नूर मलै
तह. वन्देवासी, वडक्कमवाडी जि. तिरुवण्णामलै 604505

निवेदक : श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले मुम्बई

विशेष : इस शिविर में सहभागिता करने के इच्छुक साधर्मी संयोजक से सम्पर्क करें। स्थान सीमित होने से सीमित साधर्मियों को पहले आओ–पहले पाओ के आधार पर प्रवेश दिया जायेगा। कार्यक्रम 21 फरवरी को दोपहर से प्रारम्भ होगा।

पोन्नूर चेन्नई से 130 किमी, बैंगलोर से 360 किमी, पाण्डिचेरी से 88 किमी, वन्दवासी से 8 किमी, चेटपुट से 20 किमी की दूरी पर स्थित है।
चेन्नई के कोयम्बडु बस स्टेण्ड से पोन्नूर के लिये सरकारी बस क्रमांक 104, 130, 148, 208, 422 उपलब्ध रहती हैं।

पोन्नूर आवागमन के सम्बन्ध में आप निम्न नम्बरों पर सम्पर्क करें –
पोन्नूरमलै – 04183-291136, 321520, मो. 09976975074 चेन्नई सम्पर्क – श्री दीपक कामदार : 09383370033

आचार्य कुन्कुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन (रजि.) जबलपुर की प्रस्तुति

5 GAMES IN ONE BOX

खेलों के रंग
जिनधर्म के संग

परिकल्पना एवं संयोजन
विराग शास्त्री
जबलपुर
93006424324

प्राप्ति स्थान – सर्वोदय , 702, जैन टेलाकॉम, लाल स्कूल के पास, फूटाताल,जबलपुर 482002 म.प्र.
मोबा. 9300642434, 9373294684 e-mail: kahansandesh@gmail.com

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई
संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.
संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर
प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर
डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरूदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
श्रीमती आरती जैन, कानपुर
संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

क्र.	विषय	पेज
1.	संपादकीय	2-3
2.	स्वर्ण मंदिर ग्वालियर	4
3.	108 दाने क्यों	5
4.	विदेशों में दिगम्बर मुनि.......	6
5.	रावण राक्षस क्यों	7
6.	पंचामृत अभिषेक	8-9
7.	शब्दों का अपमान न करें	10
8.	दानवीर भामाशाह	11
9.	संयम दिवस	12
10.	दांत और जीभ की लड़ाई	13-14
11.	फास्ट फूड कल्चर.....	15
12.	कलेन्डर	16-17
13.	कवितायें	18
14.	अभिवादन के प्राकृत शब्द	19
15.	निर्लोभी विद्वान....	20
16.	निस्पृहता / अपना घर	21
17.	सोशल मीडिया	22-23
18.	व्हाट्सएप अर्थात् उपदेश....	24
19.	शंका समाधान	25
20.	चहकती चेतना फार्म	26
21.	समाचार	27-28
22.	जन्म दिवस	29
23.	भुलाये नहीं भूलती	30-31
24.	कर्म प्रधान विश्व करि......	32

सदस्यता शुल्क - 400 रू. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रू. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

संपादकीय

जय जिनेन्द्र।

श्रावक छः आवश्यकों में से स्वाध्याय को परम तप माना गया है। समय -समय पर सभी मुनिगण, विद्वान अपने प्रवचनों में स्वाध्याय करने की प्रेरणा देते हैं। उनकी प्रेरणा पाकर लोग स्वाध्याय करना तो प्रारम्भ कर देते हैं परन्तु उन्हें ये नहीं पता स्वाध्याय का क्या अर्थ है और पहले किस ग्रन्थ का स्वाध्याय करना चाहिये वे तो बस स्वाध्याय के नाम पर कोई कहानी, प्रेरक प्रसंग, कोई पत्र-पत्रिका अथवा किसी के प्रवचनों की पुस्तक पढ़ना शुरु कर देते हैं। बस हो गया स्वाध्याय। आचार्यों और प्राचीन विद्वानों के मूल ग्रन्थों के स्वाध्याय करने वाले और उनके स्वाध्याय प्रेरणा देने वाले भी कम ही हैं।

दूसरी ओर आज अनेक नये लेखक भी अपनी ख्याति के लिये अपनी स्वेच्छानुसार धार्मिक पुस्तकें छपा रहे हैं, कोई तो यहाँ-वहाँ से कुछ नई-पुरानी बातों को एकत्रित कर उसके संकलन-संपादन में अपना नाम छपवाकर अपनी मान कषाय को संतुष्ट करने में लगे हैं। कोई मेरी भावना, भक्तामर आदि अन्य स्तोत्र पाठों का प्रकाशन और वितरण कर स्वयं को बड़ा प्रभावना करने वाला मान रहा है।

पिछले कुछ वर्षों से सभी पक्षों में एक परम्परा चलने लगी है - लेखकों द्वारा स्वयं लिखित साहित्य को निःशुल्क वितरण करना। निःशुल्क साहित्य लेने वाले को इससे कोई मतलब नहीं कि साहित्य कौन से अनुयोग का है ?, उसका विषय उसकी बुद्धि अनुसार है या नहीं । पर उसे तो निःशुल्क के नाम पर जो मिल जाये वह चाहिये। यह साहित्य कितने लोग पढ़ते हैं इसकी चिन्ता न तो लेखकों को है न दानदाताओं को। दानदाता एक निश्चित राशि देकर स्वयं

को जिनशासन का प्रभावक मानकर मग्न हो जाता है और लेखक पुस्तकों की अधिकतम प्रकाशित संख्या के रिकार्ड के फेर में पड़ जाता है। बिना सदस्य बने मासिक पत्र-पत्रिकायें निःशुल्क भेजी जाती हैं। ऐसा करते समय ये भूल जाते हैं कि आज जिनमंदिरों और घरों की आलमारियों में जमा साहित्य दीमक और धूल खा रहे हैं। जिनवाणी का अंश होने से रद्दी में बेचने का मन नहीं होता तो समाज के साधर्मी इस साहित्य को चुपचाप मंदिरों में रखकर अपना कर्तव्य पूरा कर रहे हैं। उनमें से ऐसी अनेक पुस्तकें और पत्रिकायें हैं जो शायद एक बार भी नहीं पढ़ी गईं। क्या आपने सुना कि किसी विख्यात लेखक (चेतन भगत जैसे) ने अपनी पुस्तकें अपने नाम के लिये फ्री बांटी हों तो भी महंगी होने के इनकी पुस्तकें लाखों की संख्या में बिकती हैं। जब हम बच्चों के स्कूल-कॉलेज की मंहगी फीस, पुस्तकें, अपने जीवन के शौक हंसते-रोते पूरे करते ही हैं तो आत्मकल्याणकारी स्वाध्याय के लिये साहित्य को उसकी सही कीमत पर खरीदने में संकोच क्यों ? मेरे विचार से जिन्हें निःशुल्क साहित्य चाहिये वे स्वाध्याय के पात्र ही नहीं। किसी जरुरतमंद की बात अलग है। भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित जैन साहित्य भी मंहगी कीमत पर उपलब्ध है और जिज्ञासुओं को उसे खरीदने में कोई संकोच नहीं। सच मायने में आज के व्यस्त जीवन में लोगों के पास स्वाध्याय के लिये समय ही नहीं है, वैसे भी देश के अधिकांश जैन मंदिरों में व्यवस्थित स्वाध्याय की परम्परा नगण्य है । स्वाध्यायी समाज में भी प्रवचन सुनने के बाद बहुत कम साधर्मी ही नियमित व्यक्तिगत स्वाध्याय कर पाते हैं। लेकिन लेखकों की स्वयं के साहित्य की निःशुल्क वितरण की परम्परा दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

और साहित्य अंततः जिनवाणी संरक्षण केन्द्र में भेजा जा रहा है। जो जिनवाणी के अविनय का दोष नहीं समझते वे उसे रद्दी में बेचकर उससे निर्भार हो रहे हैं। जरा गंभीरता से विचार करें कि इस अविनय का जिम्मेदार कौन...

- विराग शास्त्री, जबलपुर

तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में चहकती चेतना के विशेषांक का विमोचन करते हुये श्री अनन्तराय ए. सेठ, मुम्बई

ग्वालियर का प्रसिद्ध स्वर्णमंदिर

भारत के अनेक भव्य जिनमंदिर जैनशासन के अमर गौरव के मंगल गीत गाते हैं। इन विशाल जिनमंदिरों की जिनप्रतिमाओं और कलाकृति को देखकर जैन समाज के पूर्वजों के जिनधर्म के प्रति समर्पण और उनके अगाध धर्म-प्रेम का परिचय मिलता है । ऐसा ही एक अद्‌भुत जिनमंदिर है मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध नगर ग्वालियर का स्वर्ण मंदिर।

इस जिनमंदिर का निर्माण सन् 1796 में हुआ। इसका निर्माण उस समय के प्रसिद्ध कारीगरों ने लगभग 45 वर्ष में किया। इस जिनमंदिर के मूल नायक भगवान पार्श्वनाथ हैं। जिनमंदिर की छः वेदियों में कुल 163 प्रतिमायें हैं। जिनमें मूंगा, स्फटिकमणि, पाषाण आदि मूल्यवान प्रतिमायें हैं। मंदिर में समवशरण के साथ और त्रिकाल चौबीसी की प्रतिमायें भी विराजमान हैं। पूरे जिनमंदिर की दीवालों पर सोने का बहुत काम किया गया है। तीर्थ क्षेत्रों और पौराणिक चित्रों में प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया गया है इस कारण जिनमंदिर आज भी नये के समान लगता है। ऐसी कलाकृति भारतवर्ष में कहीं और दुर्लभ है। कहा जाता है कि उस समय श्रेष्ठियों ने लगभग 80 किलो सोना जिनमंदिर को प्रदान किया था।

यह जिनमंदिर ग्वालियर के लश्कर क्षेत्र में है। ग्वालियर के लिये देश के लगभग सभी प्रमुख शहरों से आवागमन के साधन उपलब्ध हैं। ग्वालियर के आसपास गोपाचल पर्वत, सिद्धक्षेत्र सोनागिर, पनिहार आदि जिनमंदिर विशेष रूप से दर्शनीय हैं। **स्वर्ण मंदिर का संपर्क सूत्र - 0751-2433727 , 9753431426**

जाप की माला में 108 दाने क्यों ?

समरम्भ समारम्भ आरम्भ, मन वच तन कीने प्रारम्भ।
कृत-कारित-मोदन करिके, क्रोधादि चतुष्टय धरिके।।

आप जानते हैं कि जाप की माला में 108 मोती या दाने होते हैं। हमारी दिनचर्या में प्रतिदिन 108 प्रकार से पापों के कार्य होते हैं उनके प्रायश्चित करने के लिये 108 बार मंत्र का स्मरण किया जाता है।

3 समरम्भ-समारम्भ-आरम्भ गुणा
3 मन से-वचन से-काय से- गुणा
3 कृत से - कारित - अनुमोदना गुणा
4 कषाय क्रोध से -मान से -माया से -लोभ से 3*3*3*4 = 108

समरम्भ - किसी कार्य को करने से पूर्व कार्य करने का भाव मन में आने भाव को समरम्भ कहते हैं।
समारम्भ - किसी कार्य को करने के लिये साधन जुटाना समारम्भ कहते हैं।
आरम्भ - किसी कार्य को प्रारम्भ करना आरम्भ कहलाता है।
मन से - किसी कार्य को मन विचार करना।
वचन से - किसी कार्य के बारे में वचनों से कहना।
काय - किसी कार्य को अपने शरीर के अंगों से करना।
कृत - किसी कार्य को स्वयं करना कृत है।
कारित - किसी कार्य को स्वयं न करके दूसरे से करवाना कारिता है।
अनुमोदना - किसी कार्य को स्वयं तो न करना परन्तु किसी के द्वारा किये जा रहे कार्य की प्रशंसा करना अनुमोदना है।

हम प्रत्येक कार्य को 4 कषाय क्रोध, मान, माया, लोभ के आवेग में करते हैं। इस प्रकार इन पापों के प्रायश्चित हेतु आत्मकल्याण की भावना से माला का जाप किया जाता है।

इसी तरह पंचपरमेष्ठी के108 गुणों की प्राप्ति हेतु भी माला का जाप किया जाता है। अरहन्तों के नव लब्धियों के 9, सिद्ध के आठ गुण, आचार्य के 36 गुण, उपाध्याय के 25 और साधुओं के 28 मूलगुण ।

विदेशों में दिगम्बर मुनियों का विहार

जैन और अन्य धर्म के पुराण ग्रन्थों से स्पष्ट होता है कि तीर्थंकरों और मुनिराजों का सम्पूर्ण आर्यखण्ड में विहार होता रहा है। अमेरिका,यूरोप, एशिया आदि के देशों में दिगम्बर मुनियों का विहार होता था। विश्व प्रसिद्ध लेखकों के कथनों से स्पष्ट है कि मुनि महावीर उस समय के आकनीय, वृकार्थप, वाल्हीक, यवरश्रुति, गांधार, ताण और कार्ण देशों में भी धर्म प्रचार करते हुये गये थे।

सम्राट सिकन्दर के साथ दिगम्बर मुनि कल्याण भारत से यूनान गये थे। यूनानी लेखकों के अनुसार कल्याण मुनि बैक्ट्रिया और इथ्यूपिया गये थे। डायोजिनेस और पैर्रहो में यूनानी कलाकारों ने दिगम्बर प्रतिमायें बनाईं थीं। वे यूनान जाते समय मुनिराज अफगानिस्तान और ईरान भी गये। मुनिराजों के प्रभाव से इस्लाम धर्म की स्थापना के समय हजारों जैनी अरब छोड़कर दक्षिण भारत आ गये । मौर्य सम्राट सम्प्रति ने मुनिराजों के इन देशों में विहार में सहायता की थी।हेनसांग के अनुसार ईस्वीं की सातवीं शताब्दी तक दिगम्बर मुनिराज अफगानिस्तान में जैन धर्म का प्रचार करते रहे। मुनिराजों के प्रभाव का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि इस्लाम धर्म के सिद्धान्तों पर जैनधर्म का गहरा प्रभाव है।

अरब के बगदाद प्रसिद्ध कवि अबु-ल-अला की रचनाओं में जैनत्व की झलक मिलती है। ये कवि शाकाहारी थे, दूध और शहद का सेवन नहीं करते थे, अहिंसा धर्म मानने के कारण चमड़े के सामान प्रयोग नहीं करते थे। इन्होंने जैन मुनिराजों के साथ रहकर उनकी चर्या को विशेष रूप से देखा था।

अफ्रीका और अबीसीनिया देशों में भी दिगम्बर मुनियों का विहार हुआ था क्योंकि वहाँ की संस्कृति में दिगम्बरत्व का विशेष आदर देखा जाता है। मिश्र में नग्न प्रतिमायें मिलीं हैं। लंका में ईसा मसीह से 400 वर्ष पूर्व सिंहलनरेश पाण्डुकाभय ने राजनगर अनुरुद्धपुर में जैन मंदिर और जैन मठ बनवाया था। यहाँ जैन साधु निरन्तर आते थे। यहाँ के 21 राजाओं के बाद में अर्थात् 438 वर्ष बाद राजा वट्ट गामिनी ने जैन मंदिर और मठ को नष्ट कराके यहाँ बौद्ध विहार बनवाया था। मुनि यशःकीर्ति इतने प्रभावशाली थे कि नगर के राजा भी उनके चरणों की पूजा करते थे।

इस अनेक प्रमाणों से सिद्ध होता है कि दिगम्बर जैन मुनिराजों का विहार विदेशों में भी होता था।

रावण को राक्षस
क्यों कहा जाता है ?

रावण के पूर्वजों को राक्षस जाति के एक देव ने सहयोग किया था और साथ ही नौ हीरों वाला एक हार प्रदान किया था। देव की सहयोग की भावना और अपनत्व को देखकर पूर्वजों ने अपने वंश का नाम राक्षस वंश रख लिया। इसी वंश में रावण का जन्म हुआ। रावण राक्षस नहीं बल्कि अर्द्धचक्रवर्ती प्रतिनारायण था। जिनेन्द्र भगवान का परम भक्त और प्रकाण्ड विद्वान था। राक्षस वंश में होने के कारण लोग उसे राक्षस कहने लगे।

प्रेरक प्रसंग

कड़वा सच

एक युवक ने अपने दादा से पूछा कि दादाजी आप लोग पहले कैसे रहते थे न कोई टेक्नोलॉजी, न कम्प्यूटर, न गाड़ियाँ, न मोबाइल.....।

दादाजी ने जबाब दिया - जैसे तुम लोग आजकल रहते हो ... न जिनदर्शन, न पूजा, न दया, न शर्म, न विनय, न आदर।

दादाजी का उत्तर सुनकर युवक चुपचाप वहाँ से चला गया।

स्वाद और विवाद

स्वाद और विवाद दोनों छोड़ दो 'स्वाद' छोड़ो तो दोनों को फायदा और 'विवाद' छोड़ो तो समाज को फायदा।

पंचामृत अभिषेक

क्या जैन शास्त्रों के अनुसार है .....

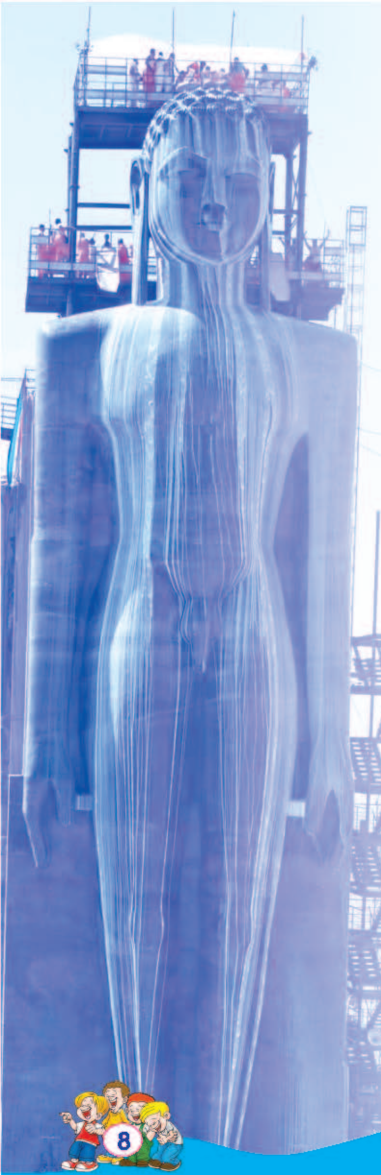

तीर्थंकर भगवन्तों के पांच कल्याणक मनाये जाते हैं। तीर्थंकर के जन्म के बाद सौधर्म इन्द्र ऐरावत हाथी पर तीर्थंकर बालक को बिठाकर सुमेरु पर्वत ले जाता है। वहाँ सौधर्म अपने इन्द्रपरिवार के साथ पाण्डुक शिला पर क्षीरसागर के जीव रहित जल के 1008 कलशों से बालक का अभिषेक करते हैं। तप कल्याणक पर देवों द्वारा जल से महाभिषेक होता है परन्तु इसके बाद अभिषेक का कोई विधान नहीं है। मुनिराज तो स्नान के त्यागी होते हैं। समवशरण में भी अभिषेक नहीं किया जाता।

श्रावक के अष्टमूलगुणों में देव पूजा प्रथम आवश्यक है। जिनेन्द्र पूजन के पूर्व प्रतिमाओं के प्रक्षाल एवं अभिषेक की परम्परा रही है। अभिषेक प्रायः प्रासुक जल से किया जाता है। कहीं-कहीं परम्परा अनुसार जल, गन्ने का रस, घी, दूध और दही के द्वारा भी अभिषेक किया जाता है इसे पंचामृत अभिषेक कहा जाता है।

जिनप्रतिमा का जल से अभिषेक की परम्परा अति प्राचीन है। ऋषभदेव के पुत्र बाहुबली के राज्य की प्राचीन राजधानी पोदनपुर तक्षशिला पाकिस्तान के पेशावर शहर में है। वहाँ के एक मंदिर के पाषाण मूर्ति में श्रावकों द्वारा जल से अभिषेक करते एक चित्र है। ये मूर्ति लगभग 1800 वर्ष पुरानी है।

आचार्य जिनसेन ने महापुराण में चार प्रकार की पूजाओं के उल्लेख में कहीं भी पंचामृत अभिषेक की चर्चा नहीं की। एक अध्ययन के अनुसार नवमी-दसमी शताब्दी तक जल से अभिषेक की परम्परा रही होगी। स्वामी कार्तिकेय ने भी कार्तिकेयानुप्रेक्षा में धर्म अनुप्रेक्षा के अन्तर्गत पूजन-विधान का उल्लेख किया पर कहीं भी अभिषेक का उल्लेख नहीं किया। इसी तरह आचार्य अमृतचन्द्रजी ने पुरुषार्थ सिद्धयुपाय में, आचार्य अमितगति ने श्रावकाचार में, चामुण्डराय ने चारित्रसार में, पण्डित आशाधरजी ने सागार धर्मामृत में, आचार्य सकलकीर्ति ने प्रश्नोत्तर श्रावकाचार में, आचार्य पद्मनन्दि ने श्रावकाचार में, पण्डित राजमल्लजी ने लाटीसंहिता में आदि प्रामाणिक अनेक ग्रन्थों में पंचामृत अभिषेक का उल्लेख नहीं है। कुछ ग्रन्थों में पंचामृत अभिषेक का वर्णन मिलता है पर ऐसा लगता है कि तात्कालीन परिस्थितियों, जैन साधर्मियों को हिन्दू धर्म की आकर्षित होने से बचाने के लिये आदि अन्य कारणों से उन्होंने पंचामृत का उल्लेख किया होगा। साथ भट्टारकों ने भी अपने हित साधने के लिये पंचामृत अभिषेक की परम्परा को स्थापित किया। उन्होंने ही अपने शिथिलाचार को पुष्ट करने के लिये शास्त्रों में परिवर्तन कराये और स्वयं के प्रतिष्ठा पाठ, श्रावकाचार आदि बनाकर उन्हें प्रामाणिक आचार्यों के नाम पर छपवाकर जिनमंदिरों में विराजमान करवा दिया।

पंचामृत अभिषेक की पम्परा शैव मत में स्कन्दपुराण आदि में मिलती है वहाँ शिव की अभिषेक-पूजा दूध, दही, चंदन आदि से की जाती है। दूसरी बात यह विचारणीय है जब मुनि अवस्था में ही स्नान आदि का त्याग हो जाता है तो अरहंत बनने के बाद अभिषेक का क्या औचित्य है? जब हम गृहस्थाश्रम में जिन द्रव्यों और रसों से स्नान नहीं कर सकते तो अभिषेक कैसे कर सकते हैं? जैनधर्म अहिंसाप्रधान है और जब दूध, दही, रस आदि से अभिषेक किया जाता है तो उसमें असंख्यात जीव राशि पैदा हो जाती है जिससे महाहिंसा होती है और जिनेन्द्र सिद्धान्तों की विराधना भी होती है। वर्तमान में अभिषेक की परम्परा धन एकत्रित का बड़ा माध्यम बन गया है। पर हमें अपने विवेक से विचार करने की आवश्यकता है।

साभार - मूलाम्नाय निबन्धावली के लेखों के अंश पर आधारित

'पाप' से जीव निंदनीय होता है। 'पुण्य' से जीव प्रशंसनीय होता है।
'धर्म' से जीव पूज्यनीय होता है।

शब्दों का सन्मान कीजिये

शब्द को ब्रह्म कहा जाता है। ये शब्द अक्षरों से मिलकर बनते हैं। इन्हीं अक्षरों से मिलकर जिनवाणी की रचना होती है। हम साधर्मी प्रत्यक्ष रूप से जिनवाणी की अविनय नहीं करते परन्तु शब्दों और अक्षरों के विनय में ध्यान नहीं रख पाते। हम दैनिक उपयोग में न्यूज पेपर का प्रयोग कई कार्यों के लिये करते हैं। जैसे - गन्दगी साफ करना, कांच साफ करना, सफर में इस पर रखकर कुछ खाना । इन कार्यों से उसमें लिखे हुये शब्दों और अक्षरों से शब्द ब्रह्म का अपमान होता है इससे ज्ञानावरणी कर्म का बन्ध होता है। इसलिये हमें किसी भी प्रकार के अक्षरों या शब्दों का किसी भी प्रकार से अविनय नहीं करना चाहिये।

न्यूज पेपर पर खाने से होने वाले नुकसान

अक्सर कई लोग सफर या घर में न्यूज पेपर पर कुछ खाद्य सामग्री रखकर खाते हैं। भारत सरकार की संस्था FASSI के अनुसार न्यूज पेपर की इंक में कई टॉक्सिन्स होते हैं जो फूड में कई तरह के विपरीत प्रभाव छोड़ते हैं। प्रिन्टिंग इंक में मल्टीपल बायो-एक्टिव मटेरियल्स, हार्मफुल कलर्स, पिगमेंटस, इंक स्टेबलाइजर यूज होते हैं। साथ ही प्रिन्टिंग इंक में प्रयोग होने वाला पैथेलेट केमिकल पेट के पाचन तंत्र को खराब करने के साथ पेट दर्द का भी कारण बन सकता है। न्यूजपेपर की इंक बहुत जल्दी पानी और तेल में मिल जाती है और वह भोजन या अन्य सामग्री लगातार खाने से पेट में पहुँच जाती है जिससे कैंसर की संभावना बढ़ जाती है।

इसलिये न्यूज पेपर का प्रयोग ऐसे कार्यों में न करके शब्दों के अपमान से बचें और अपने स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें।

ऐसा भी पर्यावरण प्रेम

इसे पर्यावरण या देश का प्रेम ही कहा जायेगा कि एक व्यक्ति पौधों की सुरक्षा, उसके विकास के लिये अपने वेतन की राशि का बड़ा हिस्सा खर्च कर देता हैं। बात है भोपाल के पर्यावरण प्रेमी श्री सुनील दुबे की। इन्हें वृक्ष मित्र भी कहा जाता है। लोग केवल फोन करके पौधों सम्बन्धी अपनी मांग और स्थान बताते हैं और निश्चित समय पर सुनीलजी पौधे और पानी लेकर पहुँच जाते हैं। आपके द्वारा तय स्थान पर वे पौधे लगायेंगे और समय-समय पर पानी और उसकी आवश्यक व्यवस्था करेंगे और लोगों से इसके बदले में वे लेते है पौधे बचाने का संकल्प। दुबेजी पिछले 15 वर्षों में 1 लाख पौधे बांट चुके हैं, लगभग 66 हजार पौधे स्वयं लगा चुके हैं साथ ही चार वीरान पार्कों को हरा-भरा कर चुके हैं। संसार में अनेक तरह के लोग हैं उनमें कुछ ऐसे ही विरले व्यक्तित्व भी हैं।

दानवीर भामाशाह

महाराणा प्रताप की सेना को हराकर अकबर की सेना ने चित्तौड़गढ़ पर अधिकार कर लिया था। महाराणा प्रताप अरावली पर्वत के वनों में अपने परिवार और कुछ राजपूत सैनिकों के साथ यहाँ-वहाँ भटक रहे थे। भोजन की कोई व्यवस्था भी नहीं थी। कहा जाता है कि उन्हें घास की रोटी भी खानी पड़ती थी। इन सब संकटों के बीच महाराणा को एक ही चिन्ता रहती थी कि चित्तौड़गढ़ को अकबर से कैसे मुक्त कराया जाये ? पर उनके पास खाने की भी व्यवस्था नहीं थी तो सैनिकों और अन्य खर्च के लिये धन कहाँ से लाते? अन्त में निराश होकर एक दिन महाराणा ने अपने सैनिकों को समझाकर उन्हें घर वापस लौटने को कहा।

जब महाराणा अपने सैनिकों को छोड़कर महारानी और बच्चों के साथ पैदल जाने लगे तब घोड़े पर सवार होकर महाराणा के मंत्री भामाशाह आये और महाराणा के चरणों में बैठकर जोर-जोर से रोने लगे और बोले - आप हम लोगों को अनाथ करके कहाँ जा रहे हैं? महाराणा ने भामाशाह को गले लगाकर कहा - जब आज भाग्य ही हमसे रूठ गया है तो तब साथ रहने से क्या लाभ ?

भामाशाह ने परिस्थिति समझकर कहा - महाराणा! आप मेरी एक बात स्वीकार करें। महाराणा बोले - मैंने तुम्हारी बात कभी नहीं टाली। कहो क्या बात है ? इतना सुनकर भामाशाह ने अपने साथ आये सेवकों को इशारा किया तो वे सेवकों ने अपने साथ लाई कई थैलियों को महाराणा के सामने उलट दिया और देखते ही देखते महाराणा के सामने सोने के सिक्कों का ढेर लग गया। भामाशाह हाथ जोड़कर महाराणा से बोला कि महाराणा! यह सब धन आपका है। मैंने और मेरे पूर्वजों ने आपके और राज्य के सहयोग ये धन कमाया है। देश हित में इसे स्वीकार कर देश का हित करें। महाराणा भामा शाह को देश प्रेम देखकर आश्चर्यचकित होकर कहा - तुम धन्य हो भामाशाह! देश का उद्धार तुम जैसे उदार पुरुषों से ही होगा। इसके बाद महाराणा ने उस धन से सेना को एकत्रित कर अकबर से अपना राज्य वापस लिया और उदयपुर को अपनी राजधानी बनाया। भामाशाह दिगम्बर जैन कुल के वीर पुरुष थे और उन्होंने दान राशि देने के साथ हाथ में तलवार लेकर मुगल शासकों से युद्ध भी लड़ा। आज भी राजस्थान सरकार दानवीर भामाशाह की स्मृति में प्रतिवर्ष समाज में योगदान देने वाले दानवीरों को एक पुरुस्कार दिया जाता है।

संयम दिवस 2017

नीचे दी गईं तिथियाँ जैन शासन के महापर्व हैं। इन दिनों आप बाजार की वस्तुओं का त्याग करें, जमीकन्द आदि अभक्ष्य का सेवन न करें। श्रृंगार न करें और विशेष जिनेन्द्र पूजन, स्वाध्याय, भक्ति आदि के माध्यम से संयम दिवस मनायें।

माह	अष्टमी	चतुर्दशी	अष्टमी	चतुर्दशी	अष्टमी
जनवरी	6	11	20	26	-----
श्री दशलक्षण महापर्व 31 जनवरी से 9 फरवरी					
फरवरी	4	9	19	25	-----
श्री अष्टान्हिका महापर्व 5 मार्च से 12 मार्च					
मार्च	5	11	20	27	-----
श्री दशलक्षण महापर्व 1 अप्रेल से 10 अप्रेल					
अप्रेल	4	10	19	25	-----
मई	3	9	19	24	-----
जून	1	8	17	23	-----
श्री अष्टान्हिका महापर्व 1 जुलाई से 8 जुलाई					
जुलाई	1	7	17	22	-----
अगस्त	--	6	15	20	29
श्री दशलक्षण महापर्व 14 अगस्त से 5 सितम्बर					
सितम्बर	--	5	13	19	28
अक्टूबर	--	4	12	18	28
श्री अष्टान्हिका महापर्व 28 अक्टूबर से 14 नवम्बर					
नवम्बर	--	3	11	17	27
दिसम्बर	--	2	8	16	26

- प्रस्तुतकर्ता - श्री गिरीश शाह, रतलाम

दांत और जीभ की लड़ाई

दांतन की जीभ से भई एक बार रार।
बोले दांत जीभ से तुझे देंगे मार।।
बड़े बोल मत बोल मूर्ख चबड़-चबड़ क्यों करती है।
हम बत्तीस अकेली तू क्या मरने से नहिं डरती है।।
बीच हमारे पागल होकर तू हरदम आवे जावे।
एक बार जो धर दबायें तो तेरा पता नहीं पावे।।
हम हड्डी के दांत बड़े मजबूत वज्र की निशानी हैं।
पत्थर तक का चबा जायें तो तेरी कौन कहानी है।।
तू ढिलमिली पिलपिली जीभ 100 ग्राम के चमड़ी की।
जो घर में से दें निकाल दें तो, कीमत न हो दमड़ी की।।
तू है बड़ी दुष्ट अन्यायी, व्यर्थ हमें धमकाती है।
मेहनत करें रात दिन हम, तू बैठी-बैठी खाती है।।
चना चबैना कंकड़ भोजन हमसे ही चबवाती है।
आप मुलायम दूध मलाई रबड़ी हलवे खाती है।।
गन्ने और आम की गुठली हमें चूसने देती है।
जो रस निकले मीठा-मीठा उसे स्वयं पी लेती है।।
हमें खड़े कर दरवाजे पर आप चैन से सोती है।
सारे घर को घेर अकेली फिर भी रोती रहती है।।
सुन अपमानजनक दांतों की बातें जिव्हा भी भड़की।
क्रोधित हो आपे से बाहर इकदम बिजली सी कड़की।।
अरे मान से भरे मूर्खो तुम सब मुझसे क्यों लड़ते हो ?
मुझे अकेली पाकर क्यों बत्तीसों व्यर्थ अकड़ते हो ?

तुम्हें नहीं मालूम जगत में सबसे बढ़कर मेरा बल।
एक बार जो बिगड़ूँ तो दुनियां में हो कोलाहल।।
जिस पर मैं नाराज हुई करती उसकी बरबादी हूँ।
तोप छुरी बन्दूक से बड़ी मैं एटम बम की दादी हूँ।।
बड़े-बड़े राजाओं के मैंने ही शीश कटाये हैं।
हिटलर चर्चिल मुसोलिनी मुझसे ही पलते आये हैं।।
मैंने ही तो रावण के क्या खट्टे दांत कराये थे।
मैंने ही कौरव-पांडव दोनों आपस में लड़वाये थे।।
मैंने ही सीताजी का जंगल वास कराया था।
मैंने ही तो लव कुश के दिल में जोश जगाया था।।
तुम बत्तीस अकेली मैं तुममें आऊँगी और जाऊँगी।
एक बात ऐसी कह दूँ तो बत्तीसों को तुड़वाऊँगी।।
सुनकर बात जीभ की सारे दांत डरे कांपे थर्राये।
अरी बहन माफकर हमको हम सब तुझसे हैं हारे।।
तू है बहन हमारी सच्ची हम सब तेरे भाई हैं।
रहें परस्पर मिलकर दोनों घर की बुरी लड़ाई है।।
जीभ और दांतों का झगड़ा ये हमको सिखलाता है।
कभी किसी से लड़ो न 'मक्खन' यदि चाहो सुख साता है।।

- भव्य प्रमोद से साभार

दुकानदार

एक सामान बेचने वाला अपने गधों पर अलग तरह का सामान लदा हुआ था। एक व्यक्ति ने पूछा - भाई इनमें क्या रखकर बेच रहे हो वह बोला - इन पाँच गधों पर पाँच तरह का सामान है। इनमें एक पर अत्याचार, दूसरे पर घमण्ड, तीसरे पर ईर्ष्या, चौथे पर बेईमानी और पाँचवे पर मायाचारी लिये जा रहा हूँ। तो व्यक्ति ने आश्चर्य से पूछा - क्या इनको भी कोई खरीदता है ? गधे वाले ने कहा - हाँ जी ! क्यों नहीं ये माल तो बहुत बिकता रहता है। देखिये पहले गधे के माल राजा, दूसरे को धनवान, तीसरे को विद्वान, चौथे को व्यापारी और पाँचवे को स्त्रियाँ खरीदने के लिये हमेशा उत्सुक रहती हैं।

पूछने वाला व्यक्ति विचार करता हुआ चला गया।

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

CALENDER 2017

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

January 01

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

February 02

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28				

March 03

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

April 04

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30						

May 05

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

June 06

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

July 07

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

August 08

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

September 09

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

October 10

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

November 11

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

December 12

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर 482 002 (म.प्र.) मोबा. 9300642434

घड़ी

टिक-टिक घड़ी बताती,
हमें समय का मूल्य बताती,
छः द्रव्यों का समय है नाम,
समय आत्मा का भी नाम,
कुन्दकुन्द प्रभु ने बतलाया,
आतम का वैभव दिखलाया।।

नल की पुकार

जहाँ भी देखो खुला नल, बन्द मुझे करना,
अनछने पानी को तुम, जरा भी न बहाना।
इसमें अनन्त जीव, ये हैं सर्वज्ञ वचन,
पानी का उपयोग तुम करना कम से कम।।

फूल और पत्ता गोभी

फूल गोभी में निकला साँप

फूल और पत्ता गोभी तुम खाना नहीं,
खाकर मुझको और पाप कमाना नहीं,
गोभी में जीव हिंसा का दोष बताया है,
सबको आज समझ में यह आया है,
फूल और पत्ता गोभी कभी न खाना तुम,
खाने से महापाप का बंध मानना तुम,
यदि तुम गोभी कभी न खाओगे,
तो तुम सब अच्छे बच्चे कहलाओगे।।

पं.राजेन्द्र कुमार जैन, जबलपुर

समाचार

तृतीय गुरुवाणी मन्थन शिविर सोनागिर में संपन्न

श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट एवं श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई के संयुक्त तत्वावधान में सिद्धक्षेत्र सोनागिर में आयोजित तृतीय गुरुवाणी मन्थन शिविर सानन्द संपन्न हुआ। दिनांक 04 दिसम्बर से 09 दिसम्बर 2016 तक आयोजित इस कार्यक्रम में अनेक नगरों के 35 विद्वानों ने सहभागिता की। कार्यक्रम की शुभारम्भ डॉ. अजितजी जैन एवं श्री शीतलचन्दजी राघौगढ़ के करकमलों ध्वजारोहण के माध्यम से हुआ। इस अवसर पर परमागम श्रावक ट्रस्ट के महामंत्री श्री पदमजी पहाड़िया इंदौर और श्री बसन्तभाई दोसी मुम्बई, ब्र. श्री कैलाशचन्दजी 'अचल', श्री मुकेशजी तन्मय, पण्डित श्री केसरीमलजी पाटनी आदि गणमान्यजन उपस्थित थे।

प्रतिदिन के कार्यक्रमों में प्रातः 7.00 बजे से जिनेन्द्र पूजन, गुरुदेवश्री का सीडी प्रवचन, सीडी प्रवचन पर पण्डित श्री वीरेन्द्रजी आगरा, पण्डित श्री रजनीभाई दोसी, हिम्मतनगर द्वारा विशेष चर्चा, दोपहर में आध्यात्मिक पाठ के पश्चात् पुनः चर्चा और रात्रि को गुरुदेवश्री का सीडी प्रवचन, इसके पश्चात् पुनः समागत विद्वानों द्वारा चर्चा का लाभ प्राप्त हुआ। शिविर में अन्य विद्वानों का यथासमय लाभ प्राप्त हुआ।

सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री महीपाल शाह, बांसवाड़ा के कुशल निर्देशन एवं श्री विराग शास्त्री, जबलपुर के संयोजन में संपन्न हुये। इस कार्यक्रम में श्री नितेश शास्त्री झालरापाटन, श्री सौरभ शास्त्री अलवर,श्री राहुल शास्त्री बण्डा, के साथ परमागम श्रावक ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री कुन्दकुन्द विद्या निकेतन के प्राचार्य श्री प्रमोद जैन, अधीक्षक द्वय श्री संभव शास्त्री, श्री रत्नेश शास्त्री का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम के अंतिम दिन सोनागिर में नवनिर्मित श्री कुन्दकुन्द-कहान कहान मुमुक्षु आश्रम में पूज्य गुरुदेवश्री के सीडी नियमित प्रवचन का प्रारम्भ समारोह पूर्वक किया गया।

मंगल संदेश स्टीकर्स उपलब्ध

हमें प्रतिदिन हर समय अपने आत्मकल्याण की भावना होती रहे - इस भावना से सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर द्वारा मंगल संदेशों के स्टीकर्स तैयार किये गये हैं।
15 स्टीकर्स का सेट मात्र 20 रु. में उपलब्ध हैं।

जिनवाणी संरक्षण केन्द्र पुनः प्रारम्भ

जीर्ण-शीर्ण जिनवाणी और पुरानी पत्र-पत्रिकाओं का संग्रहण करने हेतु जबलपुर में स्थापित जिनवाणी संरक्षण केन्द्र बारिश के मौसम के कारण बन्द कर दिया गया था। यह केन्द्र पुनः प्रारम्भ किया गया है। जिन्हें जीर्ण-शीर्ण जिनवाणी अथवा पुरानी पत्र-पत्रिकायें भेजना हो वे शीघ्र भेजें। यह केन्द्र अब प्रतिवर्ष मात्र जनवरी और फरवरी के दो माह के लिये खुलेगा । इसके बाद हम इसे स्वीकार करने में असमर्थ हैं। ध्यान रहे कृपया जीर्ण शीर्ण जिनवाणी और पत्र-पत्रिकायें ही भेजें, सामग्री भेजने के पूर्व हमसे संपर्क अवश्य करें ।

संचालक - जिनवाणी संरक्षण केन्द्र,
जबलपुर मो. 9300642434

फास्ट फूड कल्चर और जानलेवा बीमारियाँ

आजकल फास्ट फूड आधुनिकता का पर्याय बन गये हैं। इसी कारण से आज युवाओं को भी कब्ज, अल्सर, हृदय रोग, ब्लड प्रेशर, आंखों के रोग, बहरापन, डायबिटीज जैसी प्राणघातक बीमारियाँ हो रहीं हैं। विदेशी संस्कृति से प्रभावित होकर फास्ट फूड का सेवन करने वाले लोग अनजाने में ही रोगों को आमंत्रित कर रहे हैं। फास्ट फूड खाते समय बहुत स्वादिष्ट लगते हैं परन्तु धीरे-धीरे शरीर के अंगों पर घातक प्रभाव जमाते हैं। जितनी तेजी से फास्ट फूड का लोकप्रिय हो रहा है उतनी ही तेजी से रोगियों की संख्या बढ़ रही है।

फास्ट फूड हमारे स्वास्थ्य के दुश्मन हैं - आमतौर पर डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ बहुत समय से पैक रखे होते हैं और हानिकारक होते हैं। बिस्कुट, पेस्ट्री, पिज्जा, बर्गर, नमकीन, मिठाईयाँ इत्यादि को लम्बे समय तक सुरक्षित करने के लिये केमिकल्स का प्रयोग किया जाता है जो शरीर को नुकसान पहुँचाते हैं।

स्वाद के नाम पर जहर -

आजकल फैशन और आधुनिकता के नाम पर डिब्बाबन्द चटपटे, स्वादिष्ट मिठाईयों का प्रयोग किया जा रहा है। नूडल्स में मिलाये जाना वाला रंग स्वाद कोशिकाओं को भ्रमित करती है इसके कारण लम्बे समय तक मैगी नूडल्स आदि खाने से स्वाद लेने की प्राकृतिक शक्ति समाप्त होने लगती है। बासे पदार्थों को ताजा रखने वाला केमिकल अजीनामोटो आसानी से बाजार में उपलब्ध है। ये पशुओं की चर्बी से बनने के कारण मांसाहार है। भोजन में स्वाद बढ़ाने वाले सेक्रीन, साइक्लोमेट, एमेसल्फ जैसे केमिकल्स कैंसर के कारण बन सकते हैं। इसलिये आप अपने लम्बे और स्वस्थ जीवन के लिये घर का बना ताजा भोजन करें जिससे आप पाप से बचेंगे और स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा।

अभिवादन के प्राकृत शब्द

डॉ. अनेकांत शास्त्री (दिल्ली)

प्राकृत हमारी सर्वाधिक प्राचीन भाषा है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों की भाषा प्राकृत है। इस दृष्टि से यह हमारी साहित्यिक विरासत है। संभव हो तो अभिवादन में इन प्राकृत भाषा के शब्दों का प्रयोग करें -

जब हम आपस में मिलते हैं तो यह कहें - **पणमामि/णमो जिणाणं/ जयदु जिणंदो**

जिनमंदिर में प्रवेश करते समय यह कहें - **णिस्सहि-णिस्सहि-णिस्सहि**

पंचपरमेष्ठी का वंदना के समय यह कहें - **णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं**

जिनवाणी को नमस्कार करते समय यह कहें - **जयदु सुद देवता**

दिगम्बर साधुओं की वंदना में यह कहें - **णमोत्थु, णमोत्थु, णमोत्थु**

आर्यिका-ऐलक-क्षुल्लक को कहें **वंदामि/ इच्छामि**

मुनिराजों की आहार चर्या के समय यह कहें - **हे सामि, णमोत्थु, णमोत्थु, णमोत्थु**
अत्तो-अत्तो- तिट्ठो-तिट्ठो
मण सुद्धो वचन सुद्धो-काय सुद्धो
आहार-जल-सुद्धो अत्थि, भोयण
सालाए पवेशं करेन्तु

शिवपुर में जिनमंदिर का चतुर्थ वार्षिकोत्सव संपन्न

शिवपुरी के सावरकर कॉलोनी स्थित श्री वासुपूज्य जिनालय का चतुर्थ वार्षिकोत्सव दिनांक 6 जनवरी से 9 जनवरी 2017 तक अत्यंत भक्तिपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित श्री अभयकुमारजी देवलाली द्वारा रचित श्री तत्वार्थसूत्र मण्डल विधान का आयोजन हुआ।कार्यक्रम का ध्वजारोहण श्रेष्ठीश्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा के करकमलों से संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम के सौधर्म इन्द्र श्री नवीनकुमार जैन थे। कार्यक्रम में पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, ब्र. सुनील शास्त्री, श्री विराग शास्त्री के द्वारा स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ ।

सम्पूर्ण कार्यक्रम के विधि विधान श्री विराग शास्त्री, जबलपुर द्वारा संपन्न कराये गये।

इतने खुश रहो कि दूसरे भी आपको देखे तो वो भी खुश हो जाये ।

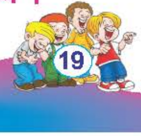

निर्लोभी विद्वान और उदार श्रेष्ठी

कविवर पण्डित भागचन्द बहुत प्रसिद्ध कवि थे और उनके द्वारा रचित भजन-भक्ति सभी जिनमंदिरों में लोकप्रिय थीं। पर वे बहुत गरीब थे। धन कमाने के लिये उन्होंने अपना गांव छोड़ दिया और दूसरे नगर पहुँच गये। रास्ते के एक जिनमंदिर में पूजन-विधान चल रहा था तो वे वहीं बैठ गये और अत्यंत भक्तिभाव से जिनेन्द्र पूजन किया और स्वाध्याय के बाद स्वयं के द्वारा रचित जिनवाणी स्तुति गाई। वह पद और सुन्दर स्वर सुनकर लोग वाह-वाह करने लगे। तभी एक श्रोता ने पण्डितजी से कहा - यह पद तो पण्डित भागचन्दजी का है। आप उन्हें कैसे जानते हैं ? तब पण्डितजी ने कहा कि 'मैं ही पण्डित भागचन्द हूँ।'

यह सुनकर और उनके पुराने से कपड़े देखकर सभी को बड़ा दुःख हुआ और उनसे आग्रह किया कि आप हमारे नगर में ही रुक जाइये और हम सबको जिनवाणी सुनाईये आपकी सारी जिम्मेदारी हमारी होगी। तो पण्डितजी बोले - भाई! धन के लिये प्रवचन करना मुझे शोभा नहीं देता। तब लोगों ने आग्रह करके धन उधार देकर उनकी एक दुकान खुलवा दी। कुछ माह बाद जब पण्डितजी की दुकान का सारा काम व्यवस्थित हो गया तो उन्होंने उन साधर्मी का धन वापस करना चाहा तो वे साधर्मी बोले पण्डितजी! यह दुकान तो आपकी ही है, ये देखिये इस दुकान के सारे पेपर आपके नाम पर ही हैं। जब पण्डितजी ने इसे लेने से मना किया तो वे साधर्मी बोले कि पण्डितजी! सर्वज्ञ भगवान की वाणी को सुनाने वाले हमें आप जैसे महाविद्वान मिले, यह हमारा सौभाग्य है तो हमारा भी कर्तव्य है कि हम आपको थोड़ा सा सहयोग करें। हमारी विनय स्वीकार कीजिये।

धन्य हैं ऐसे निर्लोभी विद्वान और उदार श्रेष्ठी।

कर्तव्य

वर्णीजी अध्यापकों के साथ घूमने जा रहे थे तभी एक सड़क किनारे एक महिला को रोते हुये देखा। वहाँ जाकर देखा कि उस महिला के पैर में कांटा लग गया था। वह महिला उसे बार-बार निकालने का प्रयास कर रही थी पर उससे वह कांटा नहीं निकल रहा था जिसके दर्द के कारण वह बहुत रो रही थी। वर्णी ने उससे कहा कि यह कांटा निकाल देता हूँ। तब महिला बोली - आप पण्डित हैं और मैं छोटी जाति की महिला हूँ, मैं नहीं चाहती कि आप मुझे छुयें इससे आपको धर्म भ्रष्ट हो जायेगा। वर्णी जी ने देखा कि उसके पैर में खजूर के पेड़ का बड़ा कांटा था। जो आसानी से नहीं निकल सकता था। उन्होंने उस महिला को समझाया और वह कांटा निकाल दिया। ऐसे थे वर्णीजी...।

हमारे आदर्श

निस्पृहता

हिन्दी साहित्य की प्रथम आत्मकथा अर्द्धकथानक के लेखक और नाटक समयसार के रचनाकार पण्डित कविवर बनारसीदासजी रात्रि में सो रहे थे। घर में काली मिर्च से भरी हुई बोरी रखीं थीं । रात में चार चोर भाई आये और एक दूसरे के सहयोग से बोरियाँ उठवाईं और तीन चोर बोरियाँ ले गये। चौथे चोर से अकेले बोरी उठाते नहीं बन रही थी। उस समय पण्डितजी जाग रहे थे। पण्डितजी ने उठे और चौथे चोर के लिये बोरी उठाकर उसके कंधे पर रखवा दी और फिर जाकर सो गये।

तीन चोरों ने घर जाकर बोरी रख दीं ।चौथा चोर भाई कुछ देर से आया तो माँ ने उससे देर होने का कारण पूछा और उसने बताया कि बोरी बहुत भारी थीं तो मैं अपने भाईयों को बोरी उठाने में सहयोग कर रहा था। माँ ने पूछा - तो तुमने अकेले बोरी कैसे उठाई ? चौथा बोला - पता नहीं, पर किसी ने मुझे सहयोग किया था। अंधेरा बहुत था, मुझे लगा कि मेरे किसी भाई ने सहयोग किया होगा..। पर तीनों भाई तो पहले ही यहाँ आ गये तो मुझे किसने सहयोग किया ?

तब माँ ने कहा कि मैं समझ गई तुम लोग आज पण्डित बनारसीदास जी के यहाँ चोरी करके आये हो और उन्हींने इसे सहयोग किया होगा। सुबह जाकर पण्डितजी का पूरा सामान वापस करके आना। इतने सज्जन पुरुष के यहाँ चोरी कैसे की ? और सुबह होते ही चारों चोर पण्डितजी का सारा सामान वापस कर आये और अपने अपराध के लिये क्षमा मांगी।

अपना घर

जैन कवि पण्डित भूधरदासजी एक बार सामायिक कर रहे थे, उसी समय एक चूहा उनके पैर के फोड़े को काटता रहा जिसके कारण फोड़े में से खून निकलने लगा। सामायिक के बाद जब उनके घर के सदस्यों ने देखा तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ। अब उस फोड़े पर बार मक्खी बैठ रही थी तो पण्डित उस मक्खी को बार-बार उड़ा रहे थे। यह देखकर उनके भाई ने कहा - जब चूहे ने लगातार एक घण्टे तक काटकर फोड़े में खून निकाल दिया तब आपने उसे भगाया नहीं, अब छोटी सी मक्खी को बार-बार उड़ा रहे हैं। तब पण्डितजी ने उत्तर दिया - उस समय मैं अकेले अपने घर (ध्यान) में था, वहाँ किसी की चिन्ता नहीं रहती। यहाँ अब शरीर के साथ हूँ, इसलिये उसकी चिन्ता रहती है।

सोशल मीडिया बना जान का दुश्मन

2016 में 18000 बच्चे मानसिक तनाव के कारण अस्पताल में भर्ती कई ने की आत्महत्या - पारिवारिक सम्बन्ध बिगड़े

तुम मेरा फोन छीने की हिम्मत कैसे की ? नालायक कहीं के, बेवकूफ, पागल अनपढ़ कहीं की.. खराब कर दिया ना मेरा फोन.... मेरे सारे काम रुक गये दुबारा मेरा फोन छुआ तो तेरे हाथ तोड़ दूँगा

ये पति-पत्नी के बीच का वह संवाद है जो आज कई घरों में देखने को मिल रहा है। जिसे जीवन भर का प्यार भरा सम्बन्ध कहा जाता है उसमें एक 10-15 हजार के मोबाइल ने दूरियाँ पैदा कर दीं हैं। यह मोबाइल परिवार के स्नेहिल सम्बन्धों में दरार पैदा कर ही रहा है साथ ही युवाओं में मानसिक तनाव भी पैदा कर रहा है। कुछ दिनों पूर्व ब्रिटेन से आई एक रिपोर्ट चौंकाने वाली है। बच्चों के मानसिक स्तर को सुधारने की दिशा में काम करने वाली संस्था नेशनल सोसायटी फॉर द प्रिवेंशन ऑफ क्रूएलिटी टू चिल्ड्रन ने एक रिपोर्ट में कहा कि 11 से 18 साल के किशोर बच्चे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, व्हाट्एप जैसे सोशल साइट्स के शिकार हो रहे हैं। किशोरों की इसकी लत लग रही है। इसके बिना उनका एक दिन भी रहना भी मुश्किल है। सोशल साइट्स में वे इतना डूब जाते हैं कि वे बाहर की दुनिया से कट

जाते हैं। आजकल के दौर में जो भी समाचार आते हैं उनमें से 90 प्रतिशत नकारात्मक समाचार हैं जिससे वे हताशा के शिकार हो रहे हैं और स्वयं को नुकसान पहुँचा रहे हैं। जैसे - नींद न आने पर नींद की गोली लेना, हाथ की नस काट लेना, खुद को आग लगा लेना। सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव के कारण पिछले एक वर्ष में ब्रिटेन जैसे अतिविकसित देश में 18,778 बच्चों ने खुद को नुकसान पहुँचाने की कोशिश की जिससे उन्हें अस्पताल में भर्ती करना पड़ा। भारत में भी इसका दुष्प्रभाव देखने को मिलता रहता है। मोबाइल न मिलने के कारण 7 वर्ष के भाई द्वारा अपनी बहन की हत्या, पति-पत्नी में तलाक के बढ़ते मामले, कम उम्र में प्यार जैसे बेकार के काम, आंखों में जलन, आंखों की रोशनी कम होना, सिर दर्द, माइग्रेन, डिप्रेशन जैसे मामले हर शहर में देखने को मिल रहे हैं। जियो जैसे कम्पनियाँ अपने प्रोडक्ट की सफलता के लिये इंटरनेट डाटा और कॉलिंग सुविधा कई महीनों के लिये फ्री में देकर इस समस्या को बढ़ाने में लगीं हुईं हैं।

आज के दौर में मोबाइल अनेक समस्याओं का समाधान भी है और कई समस्याओं का पैदा कर रहा है। मोबाइल को प्रयोग न करना तो लगभग असंभव है पर प्रयोग में सावधानी और अनावश्यक समय बरबादी न करना हम पर निर्भर है। यदि हम समय पर सावधान नहीं हुये तो हमें अपने परिवार में भी कोई न चाही घटना सुनने को मिल सकती है।

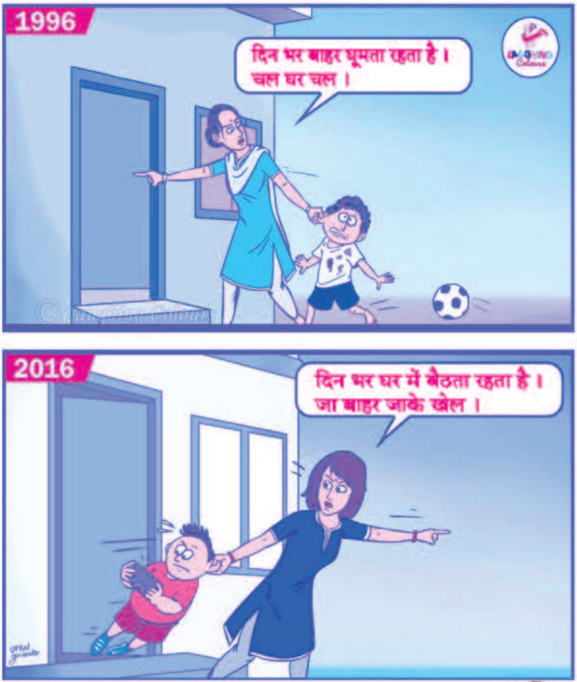

व्हाटएप अर्थात्
उपदेश देने का मंच

आजकल व्हाट्सएप पर सैकड़ों ग्रुपों में प्रतिदिन हजारों संदशों का आदान-प्रदान होने लगा है। हर व्यक्ति छोटी-छोटी बात को पोस्ट करना अपना नैतिक दायित्व समझता है। ग्रुप एडमिन स्वयं किसी कम्पनी का मालिक समझता है। हर दिन हजारों धार्मिक और नीति सन्देशों पोस्ट होते हैं पर इन्हें विचार करने वाले कितने और पालन करने वाले कितने निःसन्देह व्हाट्सएप संदेशों के आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम है पर इसके अति प्रयोग ने संदेशों की सार्थकता ही समाप्त कर दी है। किसी भी अच्छी बात को स्वयं आचरण में भले ही न लायें पर उसे फारवर्ड करना हमें सामाजिक जिम्मेदारी लगती है। संदेश भेजने वाला समझता है कि हम समाज के बड़े सुधारक बन गये हैं इसमें उनका मान ही पुष्ट होता है, भले ही उन सन्देशों को वह न अपनाता हो और पढ़ने वाला अपने को धर्मात्मा समझने लगा है।

एक विचार के अनुसार 85 प्रतिशत संदेशों को कोई पढ़ता ही नहीं। दुःखद बात यह है कि भगवान,मुनिराजों आदि धार्मिक नामों से बनने वाले ग्रुपों में राजनीति, शेर-शायरी, स्वयं की फोटो, चुटकुले, आदि पोस्ट करके शीर्षकों की मर्यादा ही समाप्त कर दी है। किसी की पत्नी या बेटे का जन्मदिन हो तो वह फेसबुक और व्हाट्सएप पर पोस्ट करके शुभकामनायें देता है समझ में नहीं आता पत्नी आपकी, बेटा आपका तो क्या अपने ही घर में शुभकामनायें नहीं दे सकते या फिर आपकी उनसे बोलचाल बन्द है। गिरनार बचाओ, सम्मेदशिखर के पर्वत पर हेलीपेड बनाने का विरोध, जैसे आन्दोलन व्हाट्सएप पर ही शुरु होते हैं और वहीं समाप्त। हाल ही में नोटबन्दी की पीड़ा सबसे ज्यादा व्हाट्सएप पर ही देखने को मिली । पढ़े-लिखे समाज में भी विवेकशून्य व्यवहार क्यों ? मात्र कुछ ग्रुपों में ही सार्थक चर्चा होती है। मुझे भी मेरे प्रियजनों और मित्रों ने लगभग 155 ग्रुप में शामिल किया है इतने ग्रुपों के संदेशों को न तो पढ़ने का समय है न उनकी सार्थकता समझ में आती है। यदि कभी पढ़ने का प्रयास भी करूँ तो अनावश्यक समय तो बरबाद होता ही है। एक ही मेसेज लगभग सभी ग्रुपों में तो आता है।

इस विचार को आप तक पहुँचाने का एक मात्र भावना है कि हम अपने द्वारा पोस्ट किये विचारों का पहले स्वयं पालन करें, ग्रुप के नाम की सार्थकता बनायें रखें, चुटकुले, शायरी भेजकर अपने जीवन का अमूल्य समय बरबाद न करें, व्यक्तिगत जीवन की घटनायें / प्रसंग / जन्मदिवस - विवाह सालगिरह आदि व्यक्तिगत ही रहने दें उसे बाजारु न बनायें। वरना वह दिन भी आयेगा जब यह सोशल मीडिया का सशक्त मंच अपनी प्रासंगिकता खो देगा।

संपादक

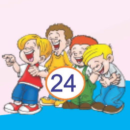

प्रश्न आपके - उत्तर जिनागम के -

शंका समाधान

प्रश्न- 1. जिनेन्द्र भगवान की शोभायात्रा में चप्पल-जूते पहनने में और कुछ खाने में कोई दोष है या नहीं ?

उत्तर - जिनेन्द्र रथयात्रा के समय कुछ भी खाने में दोष लगता है एवं श्रीजी की रथयात्रा में चप्पल, जूते न पहनें तो यह जिनेन्द्र भगवान की विनय है ।

प्रश्न- 2. जब 9 नारायण नरक जाते हैं तो उनके अतिशय क्यों होते हैं ?

उत्तर - नारायण के कोई अतिशय नहीं होते।

प्रश्न- 3. जब चौथे काल में ही मोक्ष होता है तो भगवान आदिनाथ तीसरे काल में ही मोक्ष कैसे चले गये ?

उत्तर - मोक्ष कर्मभूमि के मनुष्यों को होता है। तीसरे काल के अंत में जब एक पल्य का आठवाँ भाग शेष रह जाता है तब कर्मभूमि का प्रारम्भ हो जाता है। इसी काल में भगवान आदिनाथ का जन्म हुआ। जब तीसरे काल का तीन वर्ष साढ़े आठ माह बाकी थे तक वे मुक्ति चले गये। यह हुण्डावर्पिणी काल का दोष है। इसी कारण पंचम काल में मोक्ष नहीं होता किन्तु पंचम काल में गौतम स्वामी, सुधर्म स्वामी और जम्बूस्वामी मोक्ष गये हैं।

प्रश्न- 4. स्त्री सप्तम नरक क्यों नहीं जा सकती ?

उत्तर - सप्तम नरक मात्र वज्रवृषभ नाराच संहनन शरीर वालों को होता और यह शरीर स्त्री पर्याय में नहीं होता ।

प्रश्न- 5. अंधेरे कमरे में लाइट जलाकर भोजन कर सकते हैं क्या ?

उत्तर - भोजन प्राकृतिक प्रकाश में ही करना चाहिये।

प्रश्न- 6. छठवे काल में धर्म रहेगा या नहीं ?

उत्तर - छठवें काल में धर्म का नाश हो जायेगा।

प्रश्न- 7. जैन संस्कृति में कौन - कौनसे स्वप्न प्रसिद्ध हैं ?

उत्तर - तीर्थंकर की माता के 16 स्वप्न के अलावा जैन संस्कृति में सम्राट चन्द्रगुप्त और सम्राट भरत के 16 स्वप्न भी प्रसिद्ध हैं।

प्रश्न- 8. चक्रवर्ती को छःखण्ड में कितने वर्ष लगे ?

उत्तर - भरत चक्रवर्ती षट्खण्ड जीतने में साठ हजार वर्ष लगे थे।

क्या आप भी चाहते हैं कि आपका परिवार जिनधर्म को जाने, समझे और सुखी रहे

क्या आप अपने बच्चों को जिनधर्म के संस्कार देना चाहते हैं तो

आज ही सम्पूर्ण जैन समाज की एक मात्र धार्मिक बाल पत्रिका

चहकती चेतना के सदस्य बनिये

नाम .... पिता का नाम............................

घर का पता ....

....

फोन नं................................मोबाइल ....

ई-मेल ....

इनमें से एक पर निशान लगायें

☐ अवधि - तीन वर्ष - 400 रुपये ☐ अवधि - दस वर्ष - 1200 रुपये

चेक/ ड्राफ्ट / मनीआर्डर से चहकती चेतना, जबलपुर के नाम से भेजें।

चहकती चेतना

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंब

संपादक-विराग शास्त्री

सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, लाल स्कूल के पास, फूटाताल, जबलपुर 482002 म.प्र.

मोबाइल नं. - 09300642434 ई मेल - chehaktichetna@yahoo.com

सहयोग आमंत्रित

संस्था की योजनाओं में आपका आर्थिक सहयोग सादर आमंत्रित है।

शिरोमणि संरक्षक	- 1 लाख रुपये	परम सहायक	- 21 हजार रुपये
परम संरक्षक	- 51 हजार रुपये	सहायक	- 11 हजार रुपये
संरक्षक	- 31 हजार रुपये	सहायक सदस्य	- 5 हजार रुपये
		सदस्य	- 1 हजार रुपये

प्रत्येक सहयोगी को सदस्य को छोड़कर चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन सदस्य बनाया जायेगा। संस्था द्वारा तैयार होने वाली समस्त सी.डी. और प्रकाशन आपको निःशुल्क भेजा जायेगा। आप अपनी सहयोग राशि आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि. जबलपुर के नाम से चैक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से बनाकर भेजें। आप सहयोग राशि हमारी संस्था के पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर के बचत खाता क्रमांक 1937000101026079 में जमा करा सकते हैं।

कहान शिशु विहार में बाल संस्कार शिविर संपन्न

विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु कार्यक्रमों की शृंखला में दिनांक 11 नवम्बर से तीन दिवसीय बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस विशेष शिविर में प्रतिदिन प्रातः जिनेन्द्र पूजन के बाद सुबह और दोपहर विशेष कक्षाओं का आयोजन किया गया। रात्रि के सत्र में व्यक्तित्व विकास की कक्षा के साथ वीडियो का प्रदर्शन हुआ। इस शिविर में श्री विराग शास्त्री और श्री प्रमोद शास्त्री जयपुर विशेष रूप से पधारे। सम्पूर्ण कार्यक्रम विद्यालय निदेशक श्री सोनू शास्त्री के मार्गदर्शन एवं श्री अनेकांत शास्त्री, श्री आतमप्रकाश शास्त्री एवं श्रीमती शिखा जैन के सहयोग से संपन्न हुये।

चहकती चेतना के सदस्य ध्यान दें

चहकती चेतना के सदस्य क्रमांक 1900 से 2082 तक के की सदस्यता अवधि समाप्त हो गई है अतः उन्हें पत्रिका आगे भेजना संभव नहीं होगा। साथ ही सदस्य क्रमांक 2083 से 2164 तक की सदस्यता अवधि शीघ्र समाप्त होने वाली है। अतः पत्रिका प्राप्त करने के इच्छुक साधर्मी सदस्यता राशि हमारे बैंक खाते में जमा करके अथवा चैक या ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

बैंक का नाम - पंजाब नेशनल बैंक,
शाखा - फव्वारा चौक, जबलपुर बचत खाता
क्रमांक - 1937001010106
IFSC PUNB0193700

सदस्यता शुल्क - 400/- रु. तीन वर्ष हेतु 1200/- रु. दस वर्ष हेतु राशि जमा करके अपना सदस्यता क्रमांक अथवा अपना पूरा पता हमें 9300642434 पर SMS या What's App करें।

कहान शिशु विहार, सोनगढ़ में प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी की साधना भूमि सोनगढ़ में बालकों में जैनत्व के संस्कार हेतु संचालित श्री कहान शिशु विहार में आगामी वर्ष हेतु प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई है। यहाँ प्राकृतिक वातावरण में बालकों को आधुनिक सुविधाओं के साथ धार्मिक और नैतिक शिक्षा उपलब्ध करवाई जाती है। प्रतिवर्ष यहाँ कक्षा पाँचवीं में 60 प्रतिशत से उत्तीर्ण छात्रों को कक्षा छठवीं में प्रवेश दिया जाता है। यहाँ आवास, भोजन और विद्यालयीन शिक्षा पूर्णतः निःशुल्क है। प्रवेश हेतु संख्या सीमित है। प्रवेश फार्म भेजने की अंतिम तिथि 30 मार्च है। विस्तृत जानकारी के लिये चहकती चेतना के इसी अंक में समागत जानकारी के आधार पर संपर्क करें।

विराग शास्त्री, समन्वयक
कहान शिशु विहार, सोनगढ़

जन्म दिवस की मंगल शुभकामनायें

जन्म-मरण के अभाव की भावना में जन्म दिवस मनाने की सार्थकता है।

किसी को जन्म दिवस की शुभकामनायें देते समय कभी आपने सोचा कि आप किस बात की शुभकामनायें दे रहे हैं। हैप्पी बर्थ डे कहकर और बार बार ये दिन आये तुम जियो हजारों साल ये है मेरी आरजू ..... जैसे गीत गाकर आप उसके चतुर्गति में घूमने की भावना भा रहे हैं। अनादि काल से अपनी आत्मा को नहीं पहचानने के कारण अनन्तों बार जन्म-मरण का दुःख पड़ा है और फिर वही भावना। मनुष्य भव बहुत दुर्लभता से मिला है अब इसका उपयोग देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति और स्वरूप की साधना में होना चाहिये और हमें अपने प्रिय के प्रति भी यही भावना भाना चाहिये। जन्म दिवस पर यह भावना भाईये।

जैनधर्म मंगल मिला, मिला मानो वरदान।।
निष्का कर्म का नाश हो, करना भेद विज्ञान।

निष्का-निकिता-साहिल शाह, मुंबई 05 जनवरी 2017

भव बंधन का नाश हो, मिटे कर्म की पीर।
मिले सफलता हर कदम, पाओ प्रेम **कबीर**।।

कबीर-निकिता-साहिल शाह, मुंबई 23 जनवरी 2017

पूर्वी ऐसा काम कर, बढ़े जैन धर्म का नाम।
संकट में समता, रखो, जीवन रहे प्रशांत।।

पूर्वी प्रशांत जैन, जबलपुर 04 दिसम्बर 2016

सहज स्वभाव को धारिये, सहज वस्तु का भाव।
अनय स्वभावी आतमा, मेटो सकल विभाव।।

अनय विराग जैन, जबलपुर 19 जनवरी 2017

मानुष कुल, उत्तम धरम, मिला नेह परिवार।
सिद्धों का सन्देश यह, **अनिका** मेटे संसार।।

अनिका सन्देश जैन, जबलपुर 31 जनवरी 2017

जीवन **शौर्य** तो एक है, जानो अपना ज्ञान ।
ऐसा मंगल कार्य करो, सब जन करें प्रणाम ।।

शौर्य हिरेन शाह , हिम्मतनगर 29 दिसम्बर

भुलाये नहीं भूलती....

(एक सच्ची मार्मिक घटना)

मेरी उम्र 14 वर्ष है। बचपन से आज तक मैंने अपने हृदय में मूक पशुओं के लिये प्यार, करुणा व संवेदना को महसूस किया है। समय के साथ मैं गम्भीर होती गई और मूक पशुओं के प्रति मेरी करुणा बढ़ती गई। कुछ दिन पहले घटित एक घटना ने मुझे झकझोर दिया।

अचानक एक दिन मेरे पास एक फोन आया कि दमोहनाका (जबलपुर का एक क्षेत्र) की एक गली में एक गाय गम्भीर अवस्था में है और तड़प रही है। मैं अपने स्वभाव के अनुसार तुरन्त वहाँ पहुँच गई।मुझे कुछ समझ में नहीं आया और मैंने उसके कान में जोर-जोर से णमोकार मंत्र पढ़ना शुरु कर दिया। उसकी तकलीफ देखकर मैं पूरी श्रद्धा के साथ णमोकार मंत्र सुनाती रही और कुछ समय बाद वह गाय एकदम शान्त होने लगी, ऐसा लगा वह अपना सारा कष्ट भूल गई हो और थोड़ी ही देर में उस गाय ने अपनी आयु पूरी कर ली। इसके बाद सरकारी डॉक्टरों को बुलाकर उनकी देखरेख में गाय की बॉडी को छोड़कर घर वापस आ गई परन्तु मेरा मन उस गाय के पास ही रह गया। बार-बार उसका तड़पना मेरी आंखों के सामने आ रहा था। मुझे माँ ने बताया था कि गाय भी संज्ञी पशु है।रात भर सो नहीं पाई, यही विचार चलता रहा कि आखिर क्या कारण हो सकता है जिससे इतनी हृष्ट-पुष्ट गाय मर गई।

सुबह होते ही मैंने डॉक्टरों से जानकारी ली तब पता चला कि कचरे में बासे भोजन के साथ किसी ने बच्चे का डायपर भी फेंक दिया और वह भोजन के साथ डायपर भी गाय के खाने में आ गया और वह गले में फंस गया जिससे सांस लेना बन्द हो गया और वह मर गई। वह गाय एक गरीब परिवार की थी जिसका खर्च उस गाय का दूध बेचकर चलता था।

हम इंसान भी कितनी गल्तियाँ करते हैं जिसके कारण मूक पशुओं की जान जा रही है। हमारी एक असावधानी किसी जानवर की दर्दनाक मौत का कारण बन

जाती है। अब बतायें हम कितने शिक्षित और संवेदनशील हैं...?

विश्व में एक मात्र भारत देश में हिन्दू समाज में गाय को माता का कहा जाता है। लोग निकलते ही गाय को स्पर्श करके उसे नमन करते हैं। गाय-भैंस का दूध सभी पीते है। फिर भी उसके साथ ऐसा अमानवीय व्यवहार क्यों मैंने तो संकल्प है मैं पॉलीथिन में खाने का सामान भरकर नही फेकूँगी पर मैं आपसे ही पूछती हूँ कि आप इस पवित्र अभियान आप मेरा साथ देंगे.......।

आपसे विनम्र निवेदन

- पोलिथीन में खाने की सामग्री भरकर न फेकें।
  सब्जी आदि के छिलके स्वयं की पशुओं के सामने दें या उसे खुला ही फेकें।
- डायपर आदि अशुद्ध वस्तुयें कचरा गाड़ी या निर्धारित स्थान पर अच्छी तरह बांधकर फेकें।
- प्लास्टिक के अनुपयोगी सामान भोजन के साथ न फेकें।

कु. सुविधि जैन
लालकुंआ, जबलपुर 482002 (म.प्र)

पंतग के मांझे से पक्षियों को कटता देखकर १०० वर्ष पुराना व्यापार छोड़ा

बात कोटा के अब्दुल मजीद की है। इनकी 100 वर्ष पुरानी पतंग और मांझे की बहुत प्रसिद्ध दुकान है। कई पीढ़ियों से उनका परिवार यही व्यवसाय कर रहा है। दूर-दूर गांवों से लोग उनकी पंतग और मांझा खरीदने आते थे। उनकी दुकान का नाम मागीलाल पतंग वाला था। तीन वष पहले मांझे से पक्षियों की होने वाली मौतें, पंतग लूटते समय बच्चों के गिरकर मरने और घायल होने की घटनाओं ने उनका ह्रदय परिवर्तन कर दिया और उन्होंने अपना पैतृक कार्य बन्द करने का निर्णय किया। लाखों रुपये की आमदनी वाले का छोड़ना बहुत बड़ा निर्णय था परन्तु पक्षियों की मौतों और अन्य दुर्घटनाओं को देखते हुये उन्होंने अपना यह कार्य बन्द खिलोनों की दुकान खोल ली। अब उनका परिवार भी खुश है और मन में शांति भी मिल गई है।

अब्दुल मजीद के निर्णय और उनकी भावना को कोटिशः धन्यवाद।।

कर्म प्रधान विश्व करि राखा, जो जस करहिं सो तसफल चाखा ।

हम जाने-अनजाने में ऐसे परिणाम और पाप करते हैं कि उनसे भयंकर कर्म का बन्ध हो जाता है और जब ये कर्म उदय में आते हैं तो पूरा जीवन उसके निवारण में निकल जाता है। देखिये इन चित्रों को

एक बीमारी के कारण इस व्यक्ति का पैर इतना विशाल हो गया कि चलना-फिरना भी मुश्किल हो गया।

ये बालक जन्म से ही ऐसा ....

परिवार के 30 सदस्य और सभी की 24-24 उंगलियां

पशुओं का वात्सल्य

श्री सम्मेद शिखर में आयोजित पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर के स्वर्ण जयंती महोत्सव की झलकियाँ

श्री महावीर स्वामी जिनमंदिर के 17वें वार्षिक उत्सव पर आयोजित सिद्धचक्र मंडल विधान की झलकियाँ

श्री कुन्दकुन्द–कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले, मुम्बई द्वारा

पूज्य गुरूदेवश्री कानजी स्वामी की साधना भूमि तीर्थधाम सोनगढ़ में संचालित

श्री कुन्दकुन्द -कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह

विद्यार्थी गृह की विशेषतायें

- गुजरात के श्रेष्ठ विद्यालयों में से एक श्री महावीर चारित्र कल्याण रत्न आश्रम में लौकिक अध्यापन
- पूज्य गुरूदेवश्री की आध्यात्मिक स्थली में अध्ययन का अवसर
- छठवीं से दसवीं तक की अध्यापन सुविधा
- लौकिक अध्ययन के साथ जिनधर्म के दृढ़ संस्कार
- समय–समय पर विशिष्ट विद्वानों का समागम
- सर्वसुविधा युक्त विशाल संकुल
- शारीरिक स्वास्थ्य पर पूर्ण ध्यान
- सभी सुविधायें पूर्णतः निःशुल्क

- लगभग सभी खेलों की सुविधा
- धार्मिक विषयों का श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा अध्यापन
- वर्ष में दो बार शैक्षणिक तीर्थ यात्रा
- विशाल पुस्तकालय की सुविधा
- कठिन विषयों की विशेष कक्षायें
- साप्ताहिक गोष्ठियों एवं प्रतियोगिताओं के माध्यम से व्यक्तित्व विकास

प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ

प्रवेश फार्म जमा करने की अंतिम तिथि 20 मार्च 2017

प्रवेश पात्रता शिविर 19 अप्रेल से 21 अप्रेल 2017

संपर्क : श्री कहान शिशु विहार, राजकोट रोड, सोनगढ़ जि. भावनगर सौराष्ट्र गुजरात

फोन : 02846 244510, सोनू शास्त्री : 9785643277, आतमप्रकाश शास्त्री : 7405439519 विराग शास्त्री : 9300642434

आप प्रवेश फार्म हमारी बेवसाइट www.vitragvani.com से भी डाउनलोड कर सकते हैं। email:-kahanshishuvihar@gmail.com